

अध्ययन सामग्री

विषय- सेवा और सम्मान भाव

जीवन मूल्यों में संस्कारों का बड़ा महत्व है। ऐसा ही एक संस्कार है सेवा का भाव। तन- मन और वचन से दूसरों की सेवा में तत्पर रहना स्वयं इतना बड़ा साधन है कि उसके रहते किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं रहती। सच्चे मन से सेवा में लगे व्यक्ति को सब कुछ स्वयं ही प्राप्त हो जाता है जिसकी वह आकांक्षा रखता है।

मनुष्य जीवन की सार्थकता उसके सेवा भाव में ही है। जिन बच्चों में प्रारंभ से सेवा की भावना का स्वस्थ विकास कर दिया जाता है वे आगे चलकर समाज में सम्मान के पात्र बनते हैं। समाज के सुंदर निर्माण और भविष्य में उन्नति के लिए बच्चे में सेवा भाव विकसित करने का दायित्व अभिभावकों और शिक्षकों का है। सेवाभाव हमारे लिए आत्म संतोष का वाहक ही नहीं बनता, बल्कि संपर्क में आने वाले लोगों के बीच भी अच्छाई के संदेश को उजागर करता है। सेवा धर्म में उत्कृष्टता और उदारता का समन्वय है। दान सेवा का ही एक छोटा रूप है। जिन प्रयत्नों से यह संसार अधिक सुंदर, अधिक समुन्नत, अधिक उत्कृष्ट, अधिक सद्भावना युक्त व अधिक समर्थ बने, वे ही सेवा धर्म की सच्ची भूमिका प्रस्तुत करते हैं।

सेवा ही असल में मानव जीवन का सौंदर्य और श्रृंगार है। मदर टेरेसा जैसे मानवता के सेवक, अपने सेवा भाव के कारण ही इतिहास में अमर

मूल्यबोध एवं नैतिकता

सेवा और सम्मान भाव

हो गए हैं। मदर टेरेसा स्वयं को सदा ईश्वर की समर्पित सेवक मानती थीं। उन्होंने अपना सारा जीवन गरीबों की सेवा में लगा दिया। आज की दुनिया में ऐसे ही लोगों की जरूरत है जो मानवता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म समझते हैं। अपने लिए तो सभी जीते हैं, पर इतिहास उन्हीं को याद करता है जो दूसरों के लिए अपना जीवन अर्पित कर देते हैं।



सेवा के अंतर्गत अनेकों कार्य होते हैं। जैसे- भूखे को खाना खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना, चिड़ियों को दाना देना, पौधे लगाना, बड़े बुजुर्गों की सेवा करना, देश की सेवा करना, मानवता की सेवा करना आदि, और यही समाज हित भी है। मनुष्य वही है जो अपने आसपास दुख देखे तो व्यथित हो उठे, खुशी देखें तो प्रफुल्लित हो उठे। किसी भी व्यक्ति के योगदान का कोई पैमाना नहीं है, छोटे से छोटा योगदान भी महान कार्य का आधार बन सकता है।

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति का मूल्यांकन धन- ऐश्वर्य के आधार पर नहीं, सेवा और सद्गुणों के आधार पर किया गया है। मनुष्य को अपने पद और धन का उपयोग जन सेवा के लिए ही करना चाहिए। हाथ का महत्व हीरे- पन्ने पहनने से नहीं बल्कि दान करने से होता है।

हम सभी महामना मदन मोहन मालवीय जी के सत्य स्वरूप से परिचित हैं। वे सच्चे अर्थों में समाजसेवी और समर्पित शिक्षा शास्त्री थे। मालवीय जी कोई राजा महाराजा नहीं थे। अपने सपनों को पूरा करने के लिए उन्होंने फकीरी धारण की। ₹1 के दान से शुरुआत कर देश में काशी हिंदू विश्वविद्यालय जैसा शिक्षण संस्थान बना दिया, जो आज भी मानवता की सेवा में तत्पर है।

गांधी जी ने कहा था कि निर्धन वह नहीं है, जिसके पास उपयोग के लिए साधन कम है बल्कि निर्धन वह है जिसकी तृष्णा अधिक है और वह समाज से अपने लिए अपेक्षाएं करता है। अपनी इच्छाओं का संयमन किए बिना कोई भी व्यक्ति किसी की सेवा नहीं कर सकता है। सेवा के लिए वैयक्तिक सुखों का त्याग करना पड़ता है। जो व्यक्ति पशु-पक्षी, जीव- जंतु

मूल्यबोध एवं नैतिकता

सेवा और सम्मान भाव

अथवा प्राणी मात्र की निस्वार्थ भाव से सेवा करता है ईश्वर भी उसकी मदद करते हैं।



सेवा का एक सुंदर रूप देश प्रेम या देश की सेवा भी है। हमारे इतिहास में अनगिनत शहीदों, वीरों और क्रांतिकारियों की गाथाएं हैं, जिन्होंने अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिए हंसते- हंसते अपने प्राण न्योछावर कर दिए। यह सभी महापुरुष अपने आप में देश- प्रेम और देश सेवा के पर्याय हैं। इनका नाम मात्र सुनने से ही हृदय में देश प्रेम की भावना हिलोरे मारने लगती है।

- पाठ्य पुस्तकों में वर्णित सभी शहीदों, क्रांतिकारियों, और समाज सुधारकों के जीवन की कथाएं बच्चों के मन में -
- माता- पिता के लिए सेवा भाव,
- बड़े बुजुर्गों के लिए सेवा भाव,
- असहाय और पीड़ितों के लिए सेवा भाव,
- अपने देश के लिए प्रेम और सेवा भाव,
- संपूर्ण मानवता और जीव मात्र के लिए सेवा भाव विकसित करने में सहायक होंगी।

मानवीय मूल्य सम्मान

सम्मान का अर्थ है सम्मान अर्थात् बराबर का मान।

सम्मान एक व्यक्ति समुदाय या एक विशिष्ट व्यवहार के प्रति प्रशंसा की भावना है। सम्मान की अवधारणा के महत्व में आज की दुनिया में गिरावट आई है। मूल्यों का हास हो रहा है। आज सभी आत्म प्रशंसा में लिप्त होकर आत्म केंद्रित हो गए हैं। आज के संदर्भ में जितना महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन में मिलने वाले हर व्यक्ति का सम्मान करें उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम स्वयं ऐसे कार्य करें जो हमें सम्मान अर्जित करने में मदद करें।

सम्मान सबसे बड़ी संपत्ति है, जो एक व्यक्ति अपने अच्छे कार्यों और व्यवहार के माध्यम से कमाता है। हमारी भारतीय संस्कृति सबसे पुरातन व दुनिया में सबसे समृद्ध है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बच्चे अपने देश और उसकी महान संस्कृति का सम्मान करें।

- आज वैश्वीकरण के दौर में सभी में एक दूसरे की कला, संस्कृति, प्रतिभा और परंपराओं के लिए सम्मान होना चाहिए।
- बच्चों में बालपन से ही नारी सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए।
- हमें कक्षा में बालक- बालिका के प्रति एक समान की सोच को बल देना चाहिए।
- बच्चों के अंदर दिव्यांग जनों के प्रति सम्मान और सहायता की भावना पैदा करनी चाहिए।
- बच्चों को अपने साथ पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों को सक्षम और आत्मनिर्भर बनने में सहायता करनी चाहिए।

मूल्यबोध एवं नैतिकता

सेवा और सम्मान भाव

- बच्चे श्रम के महत्व को जाने। बच्चों में श्रम निष्ठ व्यक्तियों के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए।
- बच्चों में देश प्रेम और देश के सम्मान की भावना विकसित होनी चाहिए।
- अपने राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय चिहनों के प्रति विशेष सम्मान होना चाहिए।



बच्चों में सेवा और सम्मान का भाव विकसित करने के लिए-

- शिक्षकगण अपने आचरण से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें कि बच्चों में सभी के लिए सेवाभाव व सम्मान की भावना विकसित हो।
- सेवा और सम्मान भाव पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित करें।
- सेवा और सम्मान भाव विषय से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित करें।
- सेवा और सम्मान भाव को प्रोत्साहित करने वाली कहानियां व प्रेरक प्रसंग कक्षाओं में अवश्य सुनाएं।

क्रांतिकारियों ,शहीदों व प्रसिद्ध समाज सुधारकों के जीवन पर आधारित एकांकी/ नाटक का आयोजन करें।

दीप्ति मिश्रा

सारनाथ, चिरईगांव, वाराणसी